

होरे होरे झुलावो (१९३)

साईं मेरे झूलें सुरंग हिंडोले झोका देवो होरे होरे॥

चंदन का है झूला बनाया रेशम डोरि से सुंदर सजाया
तामें साईं साहिब झुलाया गुण निधान प्रभु गोरे॥

प्रेम विलासी साईं सुख रासी नेह निकुंज के नित्य निवासी
रूप युगल के सब प्यासी भाव मगन भए भोरे॥

आज सलोनी तीज सुहाई साईं मैया को देती वाधाई
साईं गोद में सीय रघुराई रसिक जननि चित चोरे॥

देखि दरस हिय हर्ष बढ़यो है प्रेम उमंग चित मांहि बढ़यो है
चरण कमल मन मधुप मढ़यो है लै बलाय त्रिण तोड़े॥

श्री मैगसि मैया नित निति झूलो देखि युगल को हर्ष में फूलो
वैकुण्ठेश्वर रहे अनुकूलो जीओ वर्ष किरोड़े॥